भक्तियोग अथवा कृष्णभावनामृत सभी योगों की परम संसिद्धि है। यद्यपि श्रीभगवान् यहाँ योग को श्रेष्ठ तो बताया है, परन्तु उसे भक्तियोग से उत्तम नहीं कहा है भक्तियोग पूर्ण दिव्य ज्ञानमय है, इसलिए अन्य कोई योग भक्ति से उत्तम नहीं हो सकता। आत्मज्ञानशून्य तपस्या अपूर्ण है और भगवत्-शरणागति के बिना ज्ञान भी अपूर्ण ही है। ऐसी स्थिति में कृष्णभावनाविहीन सकाम कर्म करना तो समय का केवल अपव्यय होगा। इसलिए भक्तियोग को यहाँ सर्वोत्तम योगपद्धति कहा है। अगले श्लोक में भगवान् यही अधिक स्पष्ट रूप से कहते हैं।

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः।।४७।।

योगिनाम् =योगियों में; **अपि** =भी; **सर्वेषाम्** =सब प्रकार के; **मद्गतेन** =मेरे परायण; **अन्तरात्मना** =हृदय से नित्य मेरा चिन्तन करते हुए; **श्रद्धावान्** =पूर्ण श्रद्धा-सहित; **भजते** =दिव्य सेवा करता है; **यः** =जो; **माम्** =मेरी; **सः** =वह; **मे** =मुझे; **युक्ततमः** =परम योगी; **मतः** =मान्य है।

अनुवाद

सब योगियों में भी जो योगी श्रद्धाभाव से मेरे परायण होकर प्रेममय भक्तियोग के द्वारा मेरी सेवा करता है, वह मुझसे परम अन्तरंग रूप में युक्त है और परम श्रेष्ठ है।।४७।।

तात्पर्य

इस श्लोक में **भजते** पद का गूढ़ आशय है। **भजते** पद 'भज' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'सेवा करना'। पूजना और भजना समानार्थक नहीं। पूजने का अर्थ है पूज्य का अभिवादन। परन्तु प्रेम एवं श्रद्धाभावमयी सेवा का प्रयोजन विशेष रूप से भगवान् श्रीकृष्ण के लिए है। पूज्य मनुष्य अथवा देवता का पूजन न करने से मनुष्य को केवल यह सुनना पड़ता है कि वह सौजन्यशून्य है, परन्तु परमेश्वर श्रीकृष्ण की सेवा न करने वाला तो घोर अपराधी हो जाता है। जीवमात्र श्रीभगवान् का भिन्न-अंश है; इसलिए भगवान् की सेवा करना उसका अपना स्वरूप ही है। इस स्वरूपधर्म के पालन में हुआ प्रमाद अधःपतन का कारण बनता है। श्रीमद्भागवत में प्रमाण है :

य एषां पुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरम्।
न भजन्त्यवजानन्ति स्थानाद् भ्रष्टा पतन्त्यधः।।

'जो जीवमात्र के जन्मदाता आदिपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा रूपी परम धर्म के पालन में प्रमाद करता है, वह अपनी सहज स्थिति से निःसन्देह गिर जाता है।'

इस श्लोक में भी **भजन्ति** पद आया है। **भजन्ति** का प्रयोग श्रीभगवान् के सम्बन्ध में ही किया जा सकता है, जबकि 'पूजन' शब्द देवता अथवा अन्य साधारण जीवों के लिए भी प्रयुक्त होता है। श्रीमद्भागवत के इस श्लोक का **अवजानन्ति**